रीतिकाल की आलोचना

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कालेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* मिश्र जी रीतिसिद्ध कवियों को मध्यमार्गी कवि कहते हैं, क्योंकि ये कवि रीति से बंधे भी थे और उससे कुछ स्वच्छंद होकर भी चलते थे। मिश्र जी बिहारी को रीतिसिद्ध कवियों की श्रेणी में रखते हैं।

रीतिबद्ध काव्य के विषय में मिश्र जी का कथन है — "रीतिबद्ध काव्य हिन्दी को शृंगार की उक्तियों जैसा भारी भंडार सौंप गया है। उसमें कूड़ा-करकट या केवल अशिष्ट या अश्लील वर्णन ही

नहीं है, उसमें शृंगार की प्रभूत परिमाण में इतनी अच्छी-अच्छी उक्तियाँ भी संचित हैं जितनी संस्कृत क्या, किसी भी साहित्य में उपलब्ध नहीं हो सकतीं। इसे इसकी कड़ी-से-कड़ी आलोचना करनेवाले महानुभावों ने भी स्वीकार किया है।" आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार रीतिशास्त्र का सम्यक् प्रवर्तन केशवदास से माना जाता है।

मिश्र जी ने सभी इतिहासकारों पर रीतिमुक्त काव्यधारा की अवहेलना का आरोप लगाते हुए कहा है- "हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में सभी इतिहास-कारों ने किसी-न-किसी रूप में भक्ति और रीति का नामोल्लेख तो किया है, पर युग में प्रवाहित होनेवाली एक साहित्यधारा को एकदम भूल ही गये हैं।" रीतिमुक्त कविता को केन्द्र में

लाकर मिश्र जी ने बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। यह हिन्दी आलोचना की मिश्र जी की मौलिक-देन है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी रीतिकालीन शृंगारिकता और अतिशय अलंकारिकता के विरोधी थे। उन्होंने देव और मतिराम जैसे कवियों की रचनाओं को सामंती संस्कारों से युक्त माना है, जिनमें दरबारी काव्य के सारे लक्षण मौजूद थे और जनजीवन से उनका कोई लगाव नहीं था। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने रीतिकालीन कविता का मूल्यांकन बड़े तार्किक ढंग से किया है। उन्होंने मिश्र बंधुओं के 'हिन्दी-नवरत्न' की समीक्षा भी लिखी है।

— क्रमशः